सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | मार्च-अप्रैल, 2011

तू सिद्ध होता जा

''जब इब्राहीम दिन की कड़ी धूप में अपने तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था तब यहोवा मम्रे के बांज वृक्षों के पास उसके सामने प्रकट हुआ|'' (उत्पत्ति १८:१-३३) कृपया पढ़िये|

स्पष्ट है कि तीन पुरुष , अब्राहम के तम्बू के सामने से गुजर रहे थे| जब अब्राहम ने उनको देखा , तब उनसे मिलने वह दौड़ा | अब्राहम सतर्क था| आध्यात्मिक रूप से, वह सोया नहीं था| उन्हें तीन महीने पहले ही यह आदेश मिला| 'जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हुआ तब यहोवा ने अब्राम पर प्रकट होकर उस से कहा ''मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ ; तू मेरे समुख चल और सिद्ध होता जा|'' (उत्पत्ति १७:१) अब्राहम के प्रति परमेश्वर के महान उद्देश्य थे | यदि वह परमेश्वर से लगातार नहीं मिलता, तो उनका सफल होना नामुमकिन था | परमेश्वर से हर मुलाकात पर वह ऊपर उठाता गया|

परमेश्वर हम से, और अधिक आत्मत्याग की अपेक्षा कर सकते है | हजार लोगों की जिन्दगी के बराबर , उपयुक्त जीवन जीने में परमेश्वर आपके सहायक हो सकते है | मगर इस तरह

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

ETC TV **चैनल पर**

*हर **शनिवार सुबह** 7:00 से 7:30 बजे*

धर्मी जीवन जीना

'हे याकूब के घराने के प्रधानों , हे इस्राएल के घराने के शासको , तुम जो न्याय से घृणा करते और सीधी और सरल बातों को तोड़ते-मरोड़ते हो, सुनो:' (मीका ३:९)

आदमी के ह्रदय में स्वार्थ और पाप, उस पड़ाव तक पहुँचा है कि बहुत लोग धार्मिकता एवं सही और गलत के बीच का उचित अन्तर , पहचानने से घृणा और नफरत करते है | मगर बाइबल का परमेश्वर, जो जीवित है , वह धर्मी और सच्चा परमेश्वर है| वह न्याय करनेवाला परमेश्वर है| इसलिए उनकी नज़रों में और उनके पवित्र वचन के सामने , सारे कार्यों, विचारों तथा सारे उद्देश्यों और गुप्त इच्छाओं को परखा जायेगा | हर आदमी चाहे वह उच्च हो या नीच, सब को सुनिश्चित जाँचा जायेगा| हर एक का, जैसे का तैसा न्याय होगा|

व्यवहारिक बात है कि जब कोई माँ या बाप कुछ पैसे या सम्पत्ति छोड़कर चल बसे , तो हर बेटे की सहज प्रवृत्ति यही है कि जहाँ तक हो सके वे अपने हिस्से का भाग हासिल कर लें | उन में से, अगर किसी का बहुत बड़ा परिवार हो या किसी भाई की आमदनी अल्प हो , उस माहौल में उन भाई बहनों के बीच इन विषयों का कोई , महत्व नहीं होता | 'यह उसकी अपनी गलती है | जब पिताजी ने उसे पढ़ने का अवसर दिया तो उसे मेहनत से पढ़ना चाहिये था| कम से कम उसे एक अच्छा नौकरी तो मिलती ', वे कहते| सगे भाई के प्रति इतने कठोर और निर्दयी बातें!

अब जीवित परमेश्वर यों कहते है, 'क्यों तुम धर्मी और न्यायी नहीं ठहर सकते? थोड़ा अधिक उपज देने वाला भूभाग, क्या तुम अपने भाई को नहीं दे सकते? जब पैसों की और धन- सम्पत्ति की बात आती है, तो क्या तुम इतनी बुराई से पेश आते हो?' मगर लोग न्याय से घृणा करते है|

पढ़ाई और सांस्कृतिक उन्नति की बड़ी- बड़ी बातों के बावजूद मैंने यह पाया कि संसार के कई स्थानों में , आदमी पक्षपाती, और गलत पूर्वधारणाओं से भरे है| कौम और जाति वाद से भरा उनका नजरिया बहुत संकीर्ण है | निष्पक्ष और न्याय संगत व्यवहार, उनके लिए मुश्किल से संभाव्य बात है| चाहे वह किसी परिवार में जमीन-जायदाद के बँटवारे की बात हो या अन्तराष्ट्रीय स्तर पर राजनीति की बात, यह बात सच है| स्वलाभ, स्वार्थ और तरफदारी ने उनकी समझ को धुंधला किया है|

आज कल लगता है कि संसार के कई भागों में, न्याय की उन्नति और निष्पक्ष, न्यायपूर्ण उद्देश्यों का समर्थन करना - अब अदालतों का लक्ष्य नहीं रहा| वकीलों पर दबाव डाला जाता है कि वे सरकार के चुनिन्दे सामाजिक योजनाओं और ऐसे कार्यवाहियों का समर्थन करें जिस में वह सरकार दिलचस्पी रखती है | इस तरह आम आदमी अपने मौलिक अधिकारों से वंचित है| मेहनत करने वाले व्यक्ति का, यह मानना उचित है कि उनका गलत फायदा उठाया जा रहा है| एक धर्मी व्यक्ति का, उनके प्रति घृणा और लापरवाही

का एहसास भी उचित है । स्वच्छ मन, सत्य और न्याय के विरुद्ध, झुकाव प्रबल होने का यही सब कारण है|

आदमी के अन्यायी और अनैतिक कार्य , जीवित परमेश्वर को बाध्य या डरा नहीं सकते | हरेक व्यक्ति को, परमेश्वर के सामने , इस भौतिक शरीर में किये गये हर एक काम का लेखा-जोखा देना होगा । उनके सामने अधर्म को बेदाग नही पेश किया जा सकता| परमेश्वर के उच्च न्यायालय के सामने, झूठ और असत्य को कभी नजर अन्दाज नहीं किया जायेगा । वे सिर्फ आपकी आत्मा को धिक्कारेंगे और नरक के आग का योग्य ठहरायेंगे|

बहुत लोग नहीं जानते कि धार्मिकता में , न्यायविमर्श सहज और अंतर्निहित है| यानि की धार्मिकता और न्यायविमर्श साथ- साथ चलते है| स्पष्ट कहना है तो जब उजियाला हो जाए, सब कुछ जो छिपाया जाना चाहिए , छिपाये या जिसे, देखने का साहस लोग नहीं कर पाये, उसे ढकना | दिन के उजियाले में चोर डकैती नहीं करता । हत्यारा हत्या नहीं करता | या फिर आंतकवादी अपनी अगली मुठभेड़ के बारे इके खुलेआम बैठकर चर्चा नहीं करते| सूरज उगने से पहले वे भाग जाते है|

प्रभु यीशु मसीह जो धार्मिकता का सूर्य है, उदय होगा| जब वे आपकी जिन्दगी में आते है, तो पाप को भागना होगा| हर दुष्ट उद्देश्य, हर बेईमान इच्छा, अशुद्ध कार्य, सङ्कलिंग या लैंगिक उदण्ड का अंत किया जाना होगा | अपने हृदय में पाप छिपाये रखना असंभव होगा|

बहुत लोग यह विश्वास करते है कि अधर्म, असत्य, घूस और दुष्टता का जरूर प्रतिफल मिलता है । अल्प समय तक, हालाँकि जीवित परमेश्वर अपनी महान दीर्घशान्ति से उनको समय दे । मगर यह संभव नहीं कि किसी परिवार या लोगों का समूह , जो दुष्ट है, असत्य फैलाते है और बेलिहाज़ के काड़र्क करते हैं, वे बहुत देर तक उन्नति पाये । उनका पतन तथ्य है और उनका जरूर पतन होगा|

कई लोग इस साधारण बात का ध्यान नहीं रखते की जो वे बोते है वहीं वे काटेंगे | आप जंगली बीज बोकर अच्छे गेहूं की जोरदार फसल काटने की आशा नहीं कर सकते|

लोगों से प्यार करना , उनके लिए प्रार्थना करना और उनके ऊपर से भारी बोझ हटाना, एक पादरी का यह काम है| लेकिन, अगर वह बहुत खाने- पीने और पैसा खर्च करने का आदी हो जाये, तो वह जल्दी ही पैसों का और ज़्ज़ादा लालच करने लगेगा | वास्तव में एक पादरी को पैसों से क्या काम है ? पैसे ज्यादा हों तो उसको ले कर चिन्ता ज्यादा होगी|

कोई भी पादरी सिर्फ इसलिए प्रचार करे कि उसे पैसे दिया जा रहा है ? कोई भी प्रचारक या नबी , परमेश्वर का प्रतिनिधि है| पैसे या नकदी, वह माध्यम नहीं जिसके जरिये वे कार्य करे या कुछ स्थापित करें| वह प्रार्थना और परमेश्वर से सामर्थ है जिसके बल आप पर लोगों का विश्वास टिके|

आपके बैंक में करोड़ों रुपये हो, तो उससे क्या होगा ? क्या उससे आपकी प्रार्थना और शक्तिशाली बनती ? उसके विपरीत आप वस्तुओं का अर्जन और सांसारिकता में डूब जाओगे । पादरी जो पैसों के लिए प्रचार करते है वे लोगों के लिए शाप का कारण बनेंगे । एक सच्चे मसीही पादरी के लिए एक बटुआ , उसकी सोच में आखरी चीज हो | यह सच है कि मुश्किल दिन जरूर आयेंगे | मगर प्रभु जो चिड़ियों का रखवाला है आपको नहीं भूलेंगे| अपने बचपन से ही मैंने अपने मॉ-बाप को पैसों की कदर किये बिना चलते, ही, सेवा करने के बाद, मुझे मालूम है कि यही एक मात्र रास्ता है जिस से एक सच्चा मसीही सेवक, कार्य कर सकता है|

'हाय! हम कैसे पतन और दुर्भाग्य के दिनों में जी रहें है जब पादरी पैसों के लिए प्रचार करता है| और नबी पैसों के लिए नबुवत करता है !' प्रिय पाठक, ली हुई घूस को वापस करके आप अपने इर्दगिर्द एक आध्यत्मिक संचल शुरु कर सकते हो| और परमेश्वर के वचन से अपने विवेक को धोकर शुद्ध कर सकते हो| प्रभु यीशु मसीह अपनी शान्ति , धार्मिकता और सामर्थ से आपको सम्पन्न करेंगे| आपके चारों तरफ अधर्म के कार्य करने वाले भय से थरथरायेंगे|

जब परमेश्वर का आत्मा आप में कार्य करेगा, तब सही और गलत को जाँचने का प्रबल सामर्थ आप में होगा । न्याय के आत्मा से घृणा करने के बदले , हम उसे अपनाकर गले लगायेंगे क्योंकि उसके बिना हम ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे|

- जोशुआ दानियेल|

पृष्ठ 1 से ... तू सिद्ध होता जा

आप की अच्छाइयों को बढ़ाने में , आपका स्वार्थ या अहं रुकावट बन सकता है । परमेश्वर से हर मुलाकात के साथ- साथ हमारा आत्मा- त्याग भी बढ़ता है । अब परमेश्वर, अब्राहम के घर के सामने से गुजर रहें है| उन दिनों जब आदमी बहुत निर्मल थे, वे स्वर्गदूतों को अपनी आखों से देख पाते थे । आंध्र प्रदेश में स्थित काकीनाड़ा नामक शहर में जब आत्ड्किक जागृति आई थी , लोग मसीह को अपने घरों में देखते थे| अगर हमारे चारों तरफ माहौल पवित्र और अनुकूल हो , तब परमेश्वर हम से मिल सकते हैं| पुनरूत्थान के बाद बहुत से पवित्र लोग कब्रों में से निकलकर आये और यरुशलेम में बहुतों ने

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

उनको देखा | एक पिता बनने से नौ महीने पहले, परमेश्वर अब्राहम से मिलने आये|

परमेश्वर यह देखना चाहते थे कि तीन महीनों पहले दी गयी उनकी चेतावनी के प्रति, अब्राहम सचेत हुआ की नही| अब्राहम सर्तक होकर उस सावधानी पर अमल करके , सुधर रहा था | उस समय, अब्राहम शायद परमेश्वर का मनन कर रहा था | सेवक, संपत्ति - इन सबकी वह चिन्ता नहीं कर रहा था | नहीं तो वह परमेश्वर को नहीं देख पाता | ध्यान करते समय, परमेश्वर हमसे मिलकर, हम से बात करना चाहते है | मगर आप इस दुनिया और संसारिक लाभ में ही खोये हुए हो | अब्राहम दौड़कर परमेश्वर से मिला और उनसे विनती की कि वे घर आयें और भोजन करें | एक जवान सेवक को बुलाकर, अच्छा सा नरम बछड़ा देकर पकाने के लिए कहा | उन दिनों विशिष्ट मेहमानों की ख़ातिरदारी इसी तरह की जाती थी| स्वर्गदूतों ने, परमेश्वर के दिये हुये वादों के बारे में उससे बातें कीं | परमेश्वर ने जो आप को प्रतिज्ञाएँ दी , उनके साथ आपने क्या किया? क्या आप उनको खो बैठे हो ? अगर आप परमेश्वर से प्यार करते हो , तो आप उनके वादों से भी प्रेम करोगे|

अगर आप सवेरे का समय अनिच्छुक, प्रार्थना में बिताये और बिना उत्साह के प्रभु की सेवा करे , तो परमेश्वर आपको कैसे अशीर्वादित करेंगे? परमेश्वर, दो महानगरों को नाश करने निकले थे| मगर उससे पहले इन नगरों को बचाने के लिए , अब्राहम परमेश्वर से लगातार विनती करने लगा था| परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता इस तरह रहे कि परमेश्वर हमारे साथ अपनी अत्यंत अन्तरंगिक समस्यायें भी हम से बाँटे| उन शहरों को नाश करके परमेश्वर प्रसन्न नहीं थे | अगर उनके सुधार की कोई आशा रहती , तो वे ऐसा कभी नहीं करते|

उनको चेतावनी देने वाला भी कोई नही था| और वह नगर पाप से भरे थे| उन में केवल एक ही स्वनीति से भरा जन रहता था|

क्या परमेश्वर एक विनाशकारी साधक है? नहीं| दुष्टता, खुद आपका नाश करती है| मेरे कुछ सहपाठी थे , जो पाप के आधीन हो गये थे | और अब वे नहीं रहे| उन्होंने अपने आप को नाश किया था| पाप, खुद आपके विनाश का कारण है| मगर वह मुझे और आप के साथ ऐसा ना करें| हम परमेश्वर के अपने है | परमेश्वर कहते है, 'तुम मेरे साक्षी हो |', 'यहोवा की वाणी है', 'तुम मेरे साक्षी और मेरे दास हो जिन्हें मैंने इसलिए चुना है कि तुम समझकर मुझ पर विश्वास करो और यह जान लो कि मैं वही हूँ|' (यशायाह ४३:१०)

लोगों को बचाना - उद्धार का यह काम मुझे और आपको दिया गया है| 'अतः किसी को याफा भेजकर शमौन को, जो पतरस भी कहलाता है , अपने पास बुला| वह समुद्र के किनारे चमड़े का धन्धा करनेवाले शमौन के यहाँ ठहरा हुआ है|' (प्रेरितों के काम १०:३२) कुरनेलियुस के पास एक स्वर्गदूत आया था , मगर उसने सुसमाचार नहीं सुनाया | उस स्वर्गदूत ने कहा, "शमौन पतरस को बुला लाओ और वह तुम्हारी सहायता करेगा |" लोगों के उद्धार का काम , स्वर्गदूतों को भी नहीं दिया गया| मगर वह काम हमे सौंपा गया है|

एक पुस्तिका द्वारा बचाया गया जीवन

एक्सेटर के एक पादरी ने, परमेश्वर के भय मानने वाली दो नवयुवतियों के बारे में यह बताया| वह काफी देहाती और भीतरी प्रदेश था जहाँ वह पादरी रहता था | और उन दोनों का घर वहाँ से दूर नहीं था| ऐसा हुआ कि एक गरीब अंग्रेजी नाविक जिसने फेरे लगाकर कुछ चीजों को बेचने का धंधा अपनाया, वहाँ से गुजर रहा था | उन स्त्रियों के यहाँ रुका और कंधे से बक्सा उतारकर कुछ बेचने की चीजें दिखाने लगा | और उन में से एक युवती से विनती की कि उन में से कुछ किताबें खरीद लें | उस युवती ने उत्तर दिया कि वह किसी खास किताब को बहुत दिनों से पाने की कोशिश थी, अगर वह किताब उन में से है , तो वह जरूर खरीद लेगी|

जो किताब चाहिए थी , वह मिलने पर उस युवती ने उसे खरीद लिया| अपने सेवकों से , उस गरीब नाविक को कुछ खाने-पीने को देने का कहकर, दूर से आयी अपनी सहेली का स्वागत करने और दरवाजा खोलने वहाँ से तेजी से चली गयी| इतने में वह गरीब आदमी , अपनी बिखरी चीजें समेटकर , अपने रास्ते काफी दूर तक निकल आया| सड़क के किनारे में एक अच्छा सा स्थान देखकर वहाँ रुककर अपनी भूख मिटानी चाही | अपने खटकेदार चाकू को निकाल , उसे इतनी दया से दिये आहार को खाने वह बैठ गया|

ऐसा हुआ कि उसी स्थान के निकट, दिन के दौरान एक बहुत भयानक हत्या और चोरी हुई थी| हत्यारे को पकड़ने और न्यायाधिकार के सामने पेश करने , कुछ अफ़सरों को वहाँ भेजा गया | उन में से कुछ लोगों ने , उस बेचारे गरीब आदमी के हाथों में वह खटकेदार चाकू देखकर , (अनुमान था कि कुछ ऐसा ही चाकू से, वह हत्या की गयी थी |) उसे तुरन्त गिरफ्तार किया और जेल में बन्द किया | वहाँ तीन महीनों तक बंद, न्यायविचारण के लिए पेश होने का वह इन्तजार करता रहा|

कारावास का वह सारा समय, अपने साथी- बन्दियों को बाइबल और मसीही पुस्तकें पढ़कर सुनाने में, वह व्यस्त रहा| उसका आचार-व्यवहार इतना आदर्श पूर्वक रहा कि वह जेल अधिकारी की नज़रों में आ या, जिन्होंने दया से उसकी सारी दुखःद कहानी सुनी | और उन्हें पूरा विश्वास हुआ कि वह निर्दोष है|

अदालत में उस मामले की सुनवाई का समय आया | वह सुनवाई

"पृथ्वी और जो कुछ उस में है, यहोवा ही का है - जगत और वे सब जो उस में रहते हैं |" भजन संहिता (२४:१)

पृष्ठ 3 से ...बचाया गया जीवन

इतनी दिलचस्प थी की बहुत सारे लोग इकट्ठे हो गये | सब कार्यवाही के बाद , न्यायाधीश ने यह पूछा की वह दोषी है या निर्दोष| भीड़ में से एक आवाज सुनाई दी , 'यह निरपराध है|'

सब ने पीछे मुढकर देखा कि कौन है| तुरन्त एक नवयुवती, हाथ में एक नन्ही किताब लिए आगे बढ़कर न्यायाधीश के सामने आ खड़ी | पहले तो वह भावुक हो, बेहोश सी हो ने लगी मगर अपने आपको समेटकर आगे बढ़ी| कठघरे में खड़े उस अपराधी के बचाव में अगर कुछ कहना हो तो आगे बढ़ने के लिए कहा गया| तब उसने न्यायाधीश के सामने खुलासा किया कि उसने किस तरह वह नन्ही किताब इस गरीब आदमी से खरीदी थी| उस किताब , जिस पर खरीदने की तारीख भी लिखी हुई थी, उनके सामने पेश कर दी|

आगे यह भी विवरण दिया कि जब वह आदमी उधर से निकल ही रहा था, एक सहेली जिसे कई सालों से वह नहीं मिली थी, बहुत दूर से मिलने आयी थी| वह इतनी प्रसन्न हुई और उस दिन और समय को हमेशा याद रखने की उत्सुकता से उस नन्ही किताब पर यादगार के लिए, तारीख और समय भी लिख लि या| यह वही नन्ही किताब है जो अब उसके हाथ में है|

जब यह सब चल रहा था , उस गरीब आदमी यह दखने आगे झुका कि वह निर्मल स्वर किसका था जो उसके पक्ष में विनती रहा है | वह जानता था कि वह अकेला है और इस दुनिया में अपना दोस्त कहने के लिए कोई नहीं है | उसे अच्छा लगा कि इस दुनिया में उसके दुःख बाँटने के लिए कोई है भले ही उसको बचाया नहीं जा सकता | मगर भला हुआ | जब हत्या के समय का ठीक पता लगाया गया और जो समय नन्ही किताब पर लिखा हुआ था, दोनो एक ही थे | उस से स्पष्ट हुआ कि जब वह हत्या हुई , तो वह बंदी किसी और जगह पर था | उसे रिहा कर दिया गया| पल भर में, उसे बचानेवाली वह नवयुवती के सामने उसने घुटनों के बल गिर कर, अपने तहे दिल से शुक्रिया अदा किया| 'और यही है ' उस नन्ही किताब उठाकर सब को दिखाते , पादरी ने कहा , 'यह वह नन्ही किताब है जिसने उस आदमी के जीवन को बचाया|'

- चुनीहुई|

जार्ज व्हिटफील्ड – खुले प्रांगण में प्रचार का पहला प्रवक्ता

'पृथ्वी और जो कुछ उस में है , यहोवा ही का है - जगत और वे सब भी, जो उस में रहते हैं|' (भजन संहिता २४:१)

जॉर्ज व्हिटफील्ड का जन्म , ग्लाचेस्टर की बेल नामक सराय में हुआ था| उनके माँ-बाप उस सराय के रखवाले थे| वे सहज नाटककार थे और स्कूल में नाटक में भाग लेने, बहुत रुचि रखते थे | कई बार उनको निमंत्रण मिलता कि वे उस नगर के धर्म सेवकों के सामने भाषण दें | पंद्रह साल की आयु में उनको पढ़ाई छोड़नी पड़ी कि वे साराय की रखवाली करने में अपनी माँ की सहायता करें| मगर तीन साल बाद, आक्सफोर्ड के पेमब्रोक कॉलेज में दाखिला लेने के लिए उनको मजबूर किया गया| वहाँ अपने सहपाठि यो की सेवा करके, बदले में मुफ्त शिक्षण पाने का प्रबन्ध हुआ|

पिछले कुछ समय से व्हिटफील्ड को यह आभास हो रहा था कि उनके जीवन में परमेश्व र के कुछ खास उद्देश्य है और अपने मन में परमेश्वर के प्रति तीव्र इच्छा महसूस कर रहा था | अपने आप को संसिद्ध करने वे नियमित रूप से उपवा स रखकर प्रार्थना करता रहा | और बहुधा दिन में दो बार सामाजिक आराधना में भाग लेता था| ऑक्सफोर्ड में पढ़ाई के दौरान उन्होंने चर्च आफ इग्लैण्ड की सेवकाई में प्रवेश पाना चाहा और 'मेथोडिस्ट' नामक स मूह से भी जुड़ा रहा| 'मेथोडिस्ट' भी कुछ इसी तरह परमेश्व र के प्रति भूखे-प्यासे हो सेवा में लगे थे|

वेस्ली भाइयों ने एक धार्मिक संगठन का प्रारंभ किया जिसे वे 'पवित्र लोगों का संघ' कह कर बुलाते थे| उसका मुख्य उद्देश्य, व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की खोज करना था | उनके कार्यकलापों में व्हिटफील्ड तुरन्त रुचि लेने लगा | उनको जल्द ही यह आभास होने लगा कि उनका मन परमेश्व र से बहुत दूर है| मगर उन्होंने यह तय किया कि वह ऐसी पुस्तकों का अध्ययन करेंगे जिससे वह प्रभु यीशु के का मों समान अनुभव कर पायें| मगर ऐसा होने में तीन साल गुजरे, सन् १७३५ के लेन्ट (प्रभु यीशु के क्रूस पर जाने के ४० दिन पहले का समय) के दौरान 'परमेश्वर का अनुग्रह मुझ पर हुआ कि उन्होंने मेरे मन का भारी बोझ हटा या और जीवित विश्वावस से मैं उनके पुत्र यीशु मसीह को थाम लूँ|'

व्हिटफील्ड इक्कीस वर्ष की आयु का था, जब उन्होंने मन फिराया | जब उसने यह इ च्छा जाहिर की कि उन्हें सेविकाई में प्रवेश करना है , ग्लाचेस्टर के बिशप बेनसन ने सांविधिक संघ के सामने उनका अभिषेक किये जाने का प्रबन्ध किया | अगले रविवार , सन् १७३६ में, जिस कलीसिया में बपतिस्मा लिया था , वहाँ पहली बार उन्होंने संदेश दिया| सेविकाई में उनकी इ च्छा साफ जाहिर थी ; हाँलाकि कुछ लोगों ने मजाक उड़ाया मगर कई उनके संदेश से प्रभावित हुए| बाद में बिशप के पास यह शिकायत पहुँची कि उनके संदेश ने पन्द्रह लोगों को 'पागल' बना दिया (यानी कि उन सब ने मन फिराया) बिशप का उत्तर यह था कि उसे आशा है कि वह पागलपन अगले रवि वार तक लोग न भूलें!

जल्दी ही उस नौजवान प्रचारक के पास कई , प्रचार करने के

न्यौते आने लगे | लंदन और ब्रिस्टल दोनों जगहों पर कलीसियाओं में उन्होंने प्रभु के वचन का प्रचार किया | और नयी-नयी संगठित कई मसीही संघों में भी उन्होंने प्रचार किया| नया जन्म और विश्वास के द्वारा विमोचन , इनके बारे में उनका संदेश , हॉलाकि उनके 'प्रेक्षकों के दिलों को छुआ', मगर कई दूसरों ने उनका विरोध किया और अपने उपदेश मंचों पर उनको आने नहीं दिया|

अगले साल ह्विटफील्ड ने , वेस्ली भाइयों की अपनी दूरवर्ती सेवकाई में हाथ बँटाने जॉर्जिया कॉलोनी के लिए रवाना हुए| मगर सवन्ना पहुँचते-पहुँचते उनको पता चला कि वे वापस लौट आये हैं| वे बहुत कम समय वहाँ रुके | मगर वहाँ एक अनाथालय की जरूरत उन्हें महसूस हुई | उस के लिए एक इमारत बनवाने, पैसा इकट्ठा करने वे इग्लैण्ड वापस लौट आये|

खुली-जगह में प्रचार

सन् १७३९, साल की शुरुआत में देश के पश्चि, म भाग में दौरा करतेसमय उन्होंने यह पाया कि अब भी कई कलीसियाए उनके लिए बन्द है | 'बाथ' नामक जगह और बाद में ब्रिस्टल में भी, जब कई कलीसियाओं ने अपना उपदेश मंच देने से इनकार किया तो यही इनकार , उनको परंपरा तोड़कर खुली-जगह में प्रचार करवाने में सहायक हुआ| अब तक 'हवेल्स' में सफलता से ऐसा किया जा चुका था | इस तरह एक शनिवार की दोपहर उन्होंने तय किया कि किग्सहुड के खनिकों को उनके ही इलाके में वचन देंगे|

वहाँ पहाड़ी की ओर उनकी पीठ थी, ह्विटफील्ड ने खड़े होकर करीब दो सौ खनिकों और उनके परिवारों को प्रभु का वचन बाइबल से सुनाया| उनको लगा कि 'ये लोग बिना रखवाले की भेड़ें है'| इस अनुभव से वे बहुत प्रभावित हुए और अपनी डा यरी में लिखा 'मुझे इस से पहले कभी इतना प्रसन्न नही किया होगा , जितना उस दिन खुली जगह में खड़े होकर सुनने वालों को वचन देने पर किया होगा|'

अमेरिका वापस लौटने की आशा से, ह्विटफील्ड ने वेस्ली भाइयों से निवेदन किया कि उनकी गैरहाजिरी में ब्रिस्टल में सेवकाई को सँभालें | खुले-मैदानों में उन महा सभाओं को देखकर, जॉन वेस्ली चकित रह गये | हॉलाकि उन दोनों के बीच में इस बात पर मतभेद था मगर उन्होंने तुरन्त स्वीकार किया|

जब सन् १७३९ में ह्विटफील्ड अमेरिका की कॉलनियों में पहुँचे , एक प्रतिष्ठ प्रचारक होने की ख्याति उनसे पहले ही वहाँ पहुँच चुकी थी | पच्चीस साल के जुवा प्रचारक को सुनने , न्यू इंग्लैण्ड में एक विशाल भीड़ इकट्ठी हो गयी| और इस तरह एक महीने से भी अधिक वे हर रोज करीब आठ हजार लोगों को लगातार वचन सुनाते रहे| कई ऑग्लिकन पादिरियों ने उनका विरोध किया मगर उनका दौरा सफल रहा और कइयों ने मन फिराया|

उनके उपदेश देने के वरदान की सब तारीफ करते थे और साफ है कि वे अपनी जवानी के अभिनय की कौशलता नहीं खोये थे | बेन्जमिन फ्रक्लिन जो एक प्रकाशक , लेखक और आविष्कारक है , उन्होंने ह्विटफील्ड के वक्ता होने के विषय पर बहुत उत्सुकता के साथ घोषणा की, 'हमारे देश वासियों में आया बदलाव देखने ला यक और बहुत अद्भुत है|' फ्रैंक्लिन स्वयं एक बार उनके मन को छूने वाली बातों में आ गये| अनाथों की सहायता के लिए जब आग्रह किया गया - अपने सारे पनः कही बातों को तोड़कर फ्राक्लिन ने , अपने जेब में जो सोना और चांदी है सब कुछ अर्पण में डाल दिया|

१७४०-४१ के साल में जब ह्विटफील्ड और जो नातन एड्वाड्स , कॉलनियों की सेविकाई में बहुत व्यस्त

कॉलनियों की सेविकाई में बहुत व्यस्त थे| वह आत्क्किक जागृति का बहुत प्रभावशाली समय रहा | हज़ारों लोगों ने मन फिराया और कई नयी कलीसियायें, स्थापित की गई| न्ज्ञु इग्लैण्ड से लेकर, वर्जनिया तक दक्षिण की ओर आत्क्किक जागृति फैलती गई | एक पादरी ने यूं लिखा, 'हमारे उपदेश सफल हुए, विश्राम के दिन आनंद से भरे थे | कलीसियाओं की उन्नति होती गयी | और हमारे प्रचारकों ने भी एक नयी जिन्दगी और आत्मा पाई ... '

ह्विटफील्ड, बाद के सालों में चौदह बार स्कॉटलैण्ड गये | पहली बार सन् १७४१ में गये थे | और जब अगले साल वे दूसरी बार गये, वह दौरा बहुत प्रभावशाली साबित हुआ | ग्लासगो शहर के निकट कॉमबसलॉग में संजीवन फैल गया| वहाँ वे सहायता कर पाये| उस दौरे के अंत की विशेषता यह थी कि खुली जगह में दो कम्यूनियन (प्रभु का मेज) सभायें आयोजित की गई| जिस की एक सभा में करीब २०,००० लोगों आकर्षित हुए|

बहुत सामर्थ और उत्सुकता से भरा ह्विटफील्ड की यात्रायें और प्रचार के दौर, बहुत व्यस्थ और कठिन रहते थे जिस से वे कमजोर होते गये | १५ अक्तूबर, १७७० न्यूबरीपोर्ट, न्यू इग्लैण्ड में रात के समय उनका निधन हुआ और वहीं पर उनको दफनाया गया|

ब्रिटेन और अमेरिका में , लगातार पैंतीस साल एक यात्री प्रचारक बनकर ह्विटफील्ड ने धार्मिक प्रचार सभाओं की रुप रेखा को बदल कर , विशाल सामूहिक सभाओं में प्रचार करने के एक नये विधान, के लिए रास्ता खोल दिया|

(जफ्फ्री हान्क्स द्वारा लिखित ७० महान मसीही, से चुनीहुई)